विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 23 : अंक 42 : नई दिल्ली : 12-18 जनवरी 2018

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए सानंद सुखसातापूर्वक भुवनेश्वर-कटक के बिल्कुल सन्निकट पधार गए हैं। यद्यपि पूज्यप्रवर के गत विहरण क्षेत्र में तेरापंथ समाज के परिवारों का निवास प्रायः नहीं था, किन्तु अन्य जैन एवं जैनेतर लोगों ने श्रद्धा, उत्साह और उल्लास के साथ पूज्यप्रवर का स्वागत-अभिनन्दन किया। निर्धारित कार्यक्रमानुसार भुवनेश्वर में वर्धमान महोत्सव के समायोजन के उपरान्त आचार्यप्रवर १८ जनवरी को भुवनेश्वर से प्रस्थान कर २० जनवरी को मर्यादा महोत्सव हेतु कटक में मंगल प्रवेश करेंगे। वहां २२-२४ जनवरी को पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में १५४वें मर्यादा महोत्सव का भव्य गरिमामय कार्यक्रम समायोजित होगा। कटकवासी इस महत्त्वपूर्ण आयोजन की तैयारियों को अंतिम रूप देने में निष्ठा के साथ लगे हुए हैं। २७ जनवरी को आचार्यप्रवर पश्चिम ओड़िशा की ओर प्रस्थान करेंगे। वहां के श्रद्धालु भी पलक-पांवड़े बिछाए परमाराध्य आचार्यप्रवर की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण ओड़िशा में

सुख देने वाली हो सकती हैं आध्यात्मिक इच्छाएं

२ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः बालीजोड़ी से कोलीमाटी की ओर प्रस्थान किया। विहार के दौरान 'घुटना मेलान' तथा 'मेलान' गांवों में यत्र-तत्र पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ खड़े ग्रामीण समूहों ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन पर आशीषवृष्टि की। १४.५ करीब किमी का विहार कर पूज्यप्रवर कोलीमाटी स्थित स्वप्नेश्वर आदिवासी हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। आचार्यप्रवर ने विहार के मध्य क्योंझर जिले की सीमा को अतिक्रान्त कर जाजपुर जिले की सीमा में प्रवेश किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में इच्छा का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। इच्छा के अनुसार कार्य हो जाता है तो आदमी खुश हो सकता है और इच्छा के प्रतिकूल कार्य हो जाता है तो आदमी दुःखी बन सकता है। जिस इच्छा का आधार भौतिकता और राग है, वह परम सुख देने वाली नहीं हो सकती, अपितु वह तो दुःख देने वाली हो सकती है। जिस इच्छा का आधार अध्यात्म और वैराग्य है, वह शाश्वत सुख देने वाली और कल्याणकारी हो सकती है।

आदमी को भौतिक इच्छा का संयम करना चाहिए। इच्छा आगे से आगे बढ़ सकती है। उसे आकाश के समान अनंत कहा गया है। आदमी को इच्छा का दास नहीं बनना चाहिए, अपितु इच्छाओं को अपंना दास बनाना चाहिए। उसे इच्छाओं का परिमाण करना चाहिए। श्रावक के बारहव्रतों में पांचवां व्रत है--इच्छा परिमाण। आदमी को यथासंभव इसे स्वीकार करने का प्रयास करना चाहिए। इच्छाएं अधिक होती हैं तो आत्मा कर्मों के तले दबती जाती है और इच्छाएं सीमित होती जाती हैं तो आत्मा से कर्मों का आवरण घटता जाता है। आदमी इच्छा परिमाण के द्वारा आत्मोत्थान करे, यह काम्य है।'

कार्यक्रम में उपस्थित ग्राम्यजनों और विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए। स्वप्नेश्वर आदिवासी हाइस्कूल के प्रधानाध्यापक श्री तपन कुमार चक्र ने कहा--'मैं हमारे समस्त विद्यालय परिवार की ओर से अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी का स्वागत और अभिनन्दन करता हूं। आचार्यश्री अपनी अहिंसा यात्रा के द्वारा मानव-मानव के जीवन को स्वस्थ और सुन्दर बना रहे हैं। आप हमें ऐसा आशीर्वाद दें कि हम आपके द्वारा बताए मार्ग पर चलकर अपने जीवन को सुन्दर बनाएं।'

आज दिन-रात्रि में सैंकड़ों ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। करीब पांच किलोमीटर दूरी तक के कई गांवों के लोग पैदल चलकर समूहबद्ध रूप में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचे। आचार्यप्रवर का आशीर्वाद प्राप्त कर वे तृप्ति और प्रसन्नता का अनुभव कर रहे थे। आचार्यप्रवर के त्याग-तपोमय जीवन और पावन सौम्य आभामंडल को देखकर उत्सुकता और आकर्षण के साथ आ रहे लोग हृदय में श्रद्धाभाव लिए लौट रहे थे।

अविश्वास का कारण है माया

३ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः कोलीमाटी से घासीपुरा की ओर प्रस्थित हुए। ज्यों-ज्यों सम्मुखीन सूर्य मध्य भाग की ओर बढ़ रहा था, हल्की सर्दी का स्थान हल्की गर्मी लेती जा रही थी। विहार के दौरान कोलीमाटी पन्तो, वीर गोविन्दपुर और घासीपुरा गांव के ग्रामीण बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। वीर गोविंदपुर की एक महिला अपने हाथों में फूल लिए पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ खड़ी थी। आचार्यप्रवर के पधारते ही उसने पूज्यप्रवर को साष्टांग वंदन किया और सचित्त फूलों को पूज्यप्रवर के समक्ष सड़क पर अर्पित कर दिए। उसकी भावभंगिमा पर उसकी आंतरिक श्रद्धाभाव अनायास मुखरित हो रहा था। इस प्रकार घासीपुरा गांव में कई महिलाओं और बच्चों ने पूज्यप्रवर को साष्टांग वंदन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। १७.० कि.मी. का प्रलंब विहार कर आचार्यप्रवर घासीपुरा में पधारे। झाड़ेश्वर हाइस्कूल में आज का प्रवास हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आध्यात्मिक जगत में निर्वाण (मोक्ष) का सर्वोपरि महत्त्व है। अध्यात्म की साधना का परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करना होता है। जिसके हृदय में धर्म होता है, वही व्यक्ति निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। जो शुद्ध होता है, उसमें धर्म ठहरता है। जो ऋजु होता है, उसमें शुद्धता होती है।

कोई गलती हो जाती है तो ऋजु व्यक्ति उसे सरलता से स्वीकार कर सकता है। आदमी से कोई गलती हो जाए तो उसे पुनः न दोहराने का संकल्प लेना चाहिए। हृदय में सुधार नहीं होता है तो दंड मिलने के बाद भी आदमी पुनः अपराध में प्रवृत्त हो सकता है। उसका यह लक्ष्य रहे कि गलती की पुनरावृत्ति न हो। गलतियों को त्यागने का प्रयास करना चाहिए।

आदमी पहले गलती करता है और सरलता के अभाव में वह उसे छुपाने का प्रयास भी कर लेता है। वह इस जीवन में गलती को जैसे-तैसे भले छुपा ले, किन्तु उसे आगे किसी जन्म में उसका फल भोगना पड़ सकता है। जिस व्यक्ति में सरलता होती है, वह अपनी गलती को स्वीकार कर सकता है। आदमी दूसरों से अपनी कमियों को फिर भी छिपा सकता है, किन्तु स्वयं और अनंत सिद्धों से उन्हें छिपाना संभव नहीं होता।

माया अविश्वास का कारण बनती है। बच्चों को सरलता की दृष्टि से उदाहृत किया जाता है। आदमी बड़ा होने पर भी निश्छल रहे, यह काम्य है। निश्छलता पवित्रता का एक आयाम है। ईमानदारी निश्छलता

के साथ जुड़ी हुई है। सरलता ईमानदारी का आधार है। ईमानदारी आदमी की निजी संपत्ति है। उसे उसकी सुरक्षा और वृद्धि का प्रयत्न करना चाहिए।

सरलता और सच्चाई की साधना कठिन है। सच्चाई के लिए सरलता को आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए। सच्चाई परेशान तो हो सकती है, किन्तु वह परास्त नहीं होती। एक झूठ को छिपाने के लिए आदमी को कितने-कितने झूठ बोलने पड़ सकते हैं। इसके साथ झूठ बोलने वाले व्यक्ति के कितना तनाव हो सकता है। जबकि सच बोलने वाला व्यक्ति शांति में रह सकता है।'

आचार्यप्रवर से प्रेरणा प्राप्त कर समुपस्थित शिक्षिकाओं, विद्यार्थियों व अन्य ग्राम्यजनों ने अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार की। विद्यालय के शिक्षक श्री जयदेव साहू ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

आज दिन-रात्रि में बड़ी संख्या में स्थानीय ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

विकास का आधार है विनय

४ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः घासीपुरा से रामचन्द्रपुर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में श्रीडूंगरगढ़ निवासी श्री दिलीप राठी ने पूज्यप्रवर से अपने घर में पधारने की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर ने राठी परिवार को वहीं से मंगलपाठ सुनाया। मार्गवर्ती बरीगांव और सोनापाड़ा के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। लगभग १७.० कि.मी. का प्रलंब विहार कर आचार्यप्रवर रामचन्द्रपुर में पधारे। स्थानीय ब्लाक चेयरमेन श्रीमती सुजाता साहू, पूर्व चेयरमेन श्री देवाशीष पात्रा, सरपंच श्रीमती आरती साहू, वाइस सरपंच श्री हेमंत जना, पूर्व सरपंच श्री मदनमोहन साहू, जिला परिषद के वाइस चेयरमेन श्री अक्षय कुमार साहू आदि बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर की सोत्साह अगवानी की। एन.एल. हाइस्कूल के प्रधानाध्यापक श्री सुशांत साहू अन्य शिक्षकों और सैंकड़ों विद्यार्थियों के साथ पूज्यप्रवर के स्वागत में उपस्थित थे। उन्होंने भी कतारबद्ध और करबद्ध होकर पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया।

पूज्यप्रवर का आज का प्रवास रामचन्द्रपुर स्थित एन.एल. हाइस्कूल में निर्धारित था, किन्तु आचार्यप्रवर के प्रवास कक्ष के बाहर काई थी, इस कारण चारित्रात्माओं के वहां आने-जाने में कठिनाई हो रही थी। आचार्यप्रवर ने चिंतनपूर्वक वहां से विहार का निर्णय कर दिया। विहार से पूर्व आज का प्रातराश और मुख्य प्रवचन कार्यक्रम रामचंद्रपुर में ही करना निर्णीत हुआ। तदनुसार पूज्यप्रवर का आज का प्रातराश और प्रवचन वहीं हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'मूल से वृक्ष निष्पन्न होता है, फिर फल भी मिलता है। धर्म का मूल है विनय। विनय है तो विकास होते-होते मोक्ष रूपी फल प्राप्त होता है। विनय एक ऐसा तत्त्व है, उससे आदमी को कीर्ति, श्रुत (ज्ञान), प्रशंसा आदि प्राप्त होते हैं, मानों सब कुछ मिल जाता है। आदमी के जीवन में विनय का विकास होना चाहिए। विनय के बिना आदमी तो क्या पशु और देवता भी दुःख को प्राप्त हो सकते हैं। विनीत मनुष्य, पशु और देवता सुख को प्राप्त हो सकते हैं।

इस प्रकार विनय विकास का एक बड़ा आधार है। उससे अनेक लाभ हो सकते हैं। ज्ञान भी विनय से प्राप्त हो सकता है। ज्ञान और ज्ञानदाता के प्रति विनय नहीं होता है तो ज्ञान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आदमी को उच्छृंखलता से बचते हुए विनय का अभ्यासी बनना चाहिए। विनय से विद्या मिलती है और शोभित भी होती है। विद्या का शृंगार है विनय।

अच्छा नेता वह हो सकता है, जो स्वयं विनयवान हो। जो स्वयं अनुशासन में नहीं रह सकता, उसे दूसरों पर अनुशासन करने का अधिकार भी क्यों मिले। जो स्वयं अच्छा शिष्य होता है, वह अच्छा गुरु भी हो सकता है। गुरु बनने के लिए भीतर में अच्छे शिष्यत्व का भाव भी होना चाहिए। विनय एक सद्गुण है। वह जिस आदमी के जीवन में रहता है, वह विकास कर सकता है।'

आचार्यप्रवर से अहिंसा यात्रा की अवगति और प्रेरणा प्राप्त कर बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों और विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने संकल्पत्रयी स्वीकार की। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री सुशांत कुमार साहू ने आचार्यप्रवर के स्वागत में आस्थासिक्त अभिव्यक्ति देते हुए कहा--'हमारे लिए बहुत ही गर्व की बात है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महान संत हमारे यहां पधारे और प्रवचन किया। मैं पूरे विद्यालय की ओर से उनका स्वागत करते हुए उनके चरणों में प्रणाम करता हूं। आप महान साहित्यकार, परिव्राजक, समाज सुधारक और अहिंसा के सफल व्याख्याकार हैं। आपकी अहिंसा यात्रा के तीनों संदेशों को यदि सभी भारतवासी अपना लें तो भारत स्वर्णिम बन जाएगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हम आपके द्वारा करवाए गए संकल्पों का निष्ठा के साथ पालन करेंगे।'

कार्यक्रम के उपरान्त करीब ११.४५ बजे आचार्यप्रवर ने 'रगड़ी' की ओर प्रस्थान किया। सूर्य प्रखर रूप धारण कर चुका था। उसके आतप को देखते हुए यह कहना कठिन था कि अभी सर्दी का मौसम है। जन-जन का आतप हरने के लिए पूज्यप्रवर प्रलंब विहार और आतप की परवाह किए बिना निरंतर गतिमान थे। चिलचिलाती धूप में लगभग ५.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर करीब १२.५२ बजे 'रगड़ी' गांव स्थित गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक कॉलेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ और आज का कुल विहार लगभग २२.५ कि.मी. का रहा।

गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक कॉलेज के प्रधानाध्यापक, शिक्षकों आदि ने अपराह्न में पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया। परम पूज्य आचार्यप्रवर के पदार्पण से प्रसूत प्रसन्नता उनकी मुखाकृति पर मुखर बनी हुई थी।

जाजपुर रोड में तारण-तरण जहाज का आगमन

५ जनवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज प्रातः रगड़ी से जाजपुर रोड की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती कंटाझरी तलघर के ग्रामीणों ने परमाराध्य आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर के पदार्पण से जाजपुर रोड के तीन तेरापंथी श्रद्धालु परिवार अतिशय आह्लादित और उल्लसित थे। उनकी प्रसन्न मुखाकृति अपने आराध्य के प्रथम आगमन से उपजे उनके आंतरिक उल्लास को बयां कर रही थी। स्वागत जुलूस में संभागी लोगों की विशाल उपस्थिति को देखकर यह अनुमान करना ही कठिन था कि यहां मात्र तीन ही श्रद्धालु परिवार हैं।

माहेश्वरी समाज, अग्रवाल समाज, स्थानकवासी समाज, दिगम्बर समाज आदि विभिन्न समाजों के लोगों के साथ अनेक ओड़िया लोग भी सोत्साह स्वागत जुलूस में संभागी बने हुए थे। जाजपुर रोड नगरपालिका की चेयरमेन श्रीमती सविता राउत ने भी अपने सहयोगियों के साथ पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। मार्ग में यत्र-तत्र खड़े लोग भी अहिंसा यात्रा के महानायक और उनके कारवां को निहार रहे थे। ज्यों-ज्यों उन्हें पूज्यप्रवर के विषय में जानकारी प्राप्त हो रही थी, वे लोग करबद्ध होकर पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर रहे थे। मार्गस्थ निर्मीयमाण 'सिटी सेंटर' मॉल के समीप संबद्ध श्रद्धालु परिवार के सदस्यों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया।

लगभग १३.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर जाजपुर रोड के श्री पूनमचन्द सेठिया परिवार के निवास पर पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। अपने आराध्य का एकदिवसीय प्रवास सेठिया परिवार को धन्यता की अनुभूति करा रहा था।

पी.के. राइस मिल में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'परम पूज्य आचार्यप्रवर का आज जाजपुर रोड में पदार्पण हुआ है। मारवाड़ी भाषा में जहाज को 'जाज' कहते हैं। समुद्र को पार करना होता है तो लोग जहाज में सवार होते हैं। विदेशों व बड़े शहरों में जाना होता है तो हवाई-जहाज का उपयोग करते हैं। ऐसा मानना चाहिए कि आज जाजपुर रोड में एक विशेष जहाज का आगमन हुआ है। परम पूज्य आचार्यप्रवर भाव जहाज हैं। जिनकी शरण में संसार समुद्र को पार किया जा सकता है। जाजपुर रोड के लोग इस भाव जहाज में सवार होकर अपना जीवन संवारें और संसार सागर को पार करने की दिशा में प्रस्थान करें।'

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी को आत्मदमन का अभ्यास करना चाहिए। अपने आप पर अनुशासन करने का प्रयास करना चाहिए। अणुव्रत आत्मानुशासन का एक उपाय है। आत्मानुशासन का तात्पर्य है--मनोनुशासन, वचोनुशासन, शरीरानुशासन और इन्द्रियानुशासन। आदमी मन, वचन, शरीर और इन्द्रियों पर अनुशासन कर लेता है तो उसकी निष्पत्ति आत्मानुशासन के रूप में आ जाती है।

आदमी मन से कितना चिंतन करता रहता है। चाहे-अनचाहे मन में विचार आ जाते हैं। वह बैठे-बैठे कितने दूर की कल्पना कर लेता है। वह मन पर अनुशासन करना सीखे, यह काम्य है। ध्यान के द्वारा भी मन पर अनुशासन करने का प्रयास किया जा सकता है।

व्यक्ति यदा-कदा अनपेक्षित बोल लेता है। वह कभी ऐसा बोल देता है कि लेने का देना पड़ जाता है। उसे सोचे-विचारे बिना और अनपेक्षित नहीं बोलना चाहिए। एक-दो घंटे का मौन करना अच्छा है, किन्तु अनपेक्षित नहीं बोलना बड़ा मौन होता है। आदमी को वाचालता और कटु वचनों के प्रयोग से भी बचना चाहिए।

आदमी को शारीरिक चेष्टाओं का संयम करना चाहिए। प्रतिदिन कुछ समय शरीर को स्थिर रखने का अभ्यास भी करना चाहिए। शरीर के द्वारा किसी को कष्ट नहीं देना चाहिए।

इन्द्रियों का संयम भी आत्मानुशासन का एक उपाय है। इस प्रकार संयम के द्वारा आत्मानुशासन को साधा जा सकता है। जो अपने पर अनुशासन नहीं करता, उस पर दूसरे अनुशासन कर सकते हैं। जो आत्मानुशासी होता है, वह दूसरों पर भी शासन कर सकता है।'

पूज्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन के अंतर्गत प्रसंगवश कहा--'आज हमारा जाजपुर रोड में आना हुआ है। धर्म रूपी जहाज के द्वारा आदमी संसार समुद्र का पार पा सकता है।' पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति और प्रेरणा प्राप्त कर जाजपुर रोड के सैंकड़ों जैन-जैनेतर लोगों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

कोरेई विधायक श्री आकाशदास नायक ने आचार्यप्रवर के स्वागत में कहा--'आज हमारे लिए सौभाग्य और प्रसन्नता की बात है कि हमारे शहर और अंचल में अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी का आगमन हुआ है। मैं ऐसे महापुरुष का हमारे क्षेत्र की समस्त जनता की ओर से हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन करता हूं। आपने अपने प्रवचन के माध्यम से अभी हमें जो ज्ञान दिया, मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ हूं। आचार्यश्री के संदेशों को हम सभी अपने जीवन में उतार लें तो हमारा जीवन ही नहीं, पूरा समाज बदल जाएगा।'

श्री सुभाष भूरा, श्री कन्हैयालाल चोरड़िया, श्रीमती मंजू खटेड़, श्री मंगलचंद चोपड़ा, कटक प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मोहनलाल सिंघी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। जाजपुर रोड तेरापंथ समाज की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। माहेश्वरी समाज की महिलाओं ने भी गीत की प्रस्तुति के द्वारा पूज्यचरणों में भावसुमन अर्पित किए। बोथरा परिवार के सदस्यों ने भी पूज्यप्रवर के अभिनन्दन में गीत प्रस्तुत किया। श्री पदमचंद सेठिया ने अपने निवास में प्रवास करने हेतु पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में कृतज्ञता अर्पित की। श्रीमती भावना चोरड़िया ने गीत के द्वारा पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना की।

श्री लक्ष्मण महिपाल ने आचार्यप्रवर का स्वागत करते हुए कहा--'आज महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणस्पर्श पाकर हमारे नगर की धरती धन्य हो गई। हम जाजपुरवासी आपका स्वागत-अभिनन्दन कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। आपके संदेशों के श्रवण का अवसर वास्तव में हम सभी के जीवन को संवारने का सर्वश्रेष्ठ अवसर है। आपकी अहिंसा यात्रा के तीनों आयामों को जीवन में उतारने से मनुष्य को अवश्य ही सद्गति प्राप्त होगी। आपके संदेशों से देश व समाज में अवश्य बदलाव आएगा, ऐसा मेरा विश्वास है।'

जाजपुर रोड नगरपालिका की चेयरमेन श्रीमती सविता राउत ने आचार्यप्रवर के अभिनन्दन में कहा--'मैं अपने नगर की नगरपालिका की ओर से शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी का स्वागत करती हूं, अभिनन्दन करती हूं। आपके चरणरज के स्पर्श से हमारा शहर पवित्र हो गया। आपकी यह अहिंसा यात्रा एक पवित्र यात्रा है, सत्य की यात्रा है, धर्म की यात्रा है। मेरा यह विश्वास है कि आचार्यश्री की इस यात्रा से पूरे विश्व का कल्याण हो सकता है।'

पार्षद उषा राणी सामल ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए कहा--'इस अमृतबेला में इतना ही कहना चाहूंगी कि हमने जरूर कुछ अच्छे कर्म किए होंगे, जो अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी हमारे यहां पधारे। यह हमारे लिए नववर्ष की बहुत अच्छी व पवित्र शुरूआत हुई है। आपके आने से हम सभी के दिमाग में जो सकारात्मक विचार जागे, वह आगे भी बने रहें तथा हम सभी ने आपसे जो संकल्प स्वीकार किए हैं, वे हमारे जीवन को प्रकाशित करते रहें, मैं आपसे यही आशीर्वाद चाहती हूं।'

मुस्लिम समाज के शेख हबीबबुर्रहमान ने कहा--'आज हमारे बीच में पहुंचे संत आचार्यश्री महाश्रमणजी का मैं मुस्लिम समाज की ओर से तहेदिल से इस्तकबाल करता हूं। आपका यह प्रयास दुनिया में बढ़ते अंधेरे में मानों एक चिराग के समान है। मुस्लिम समाज का जैन समाज के साथ बहुत पुराना ताल्लुकात है। हम आचार्यश्री से यही अरदास करते हैं कि वे बार-बार ओड़िशा में तशरीफ रहें और भाईचारे का संदेश देकर हम सभी के आपसी प्रेम और भाईचारे को और अधिक प्रगाढ़ बनाते रहें। जैनिज्म का मैसेज पूरी दुनिया के लिए है। आचार्यश्री! हम लोग आपका स्वागत मस्जिद में करना चाहते हैं। आपकी इजाजत हो तो मैं यह जरूर चाहूंगा कि आप हमारे यहां तशरीफ लाएं और हमारे साथियों को भी अपनी अहिंसा यात्रा का पैगाम दें।'

पुरस्कार की घोषणा

आज के कार्यक्रम में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के महामंत्री श्री प्रफुल्ल बेताला ने महासभा की ओर से सन् २०१७ का 'मनोहरी देवी डागा समाज सेवा पुरस्कार' श्री मांगीलाल विनायकिया (राजलदेसर-अहमदाबाद) को दिए जाने की घोषणा की।

कार्यक्रम में करीब ११.११ बजे से परम पूज्य आचार्यप्रवर ने जाजपुर रोड के श्रद्धालुओं को सम्यक्त्व दीक्षा स्वीकार करवाई। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आज माध्याह्न में पूज्यप्रवर कुछ समय के लिए पोढाकर (लेटकर) विश्राम कर रहे थे। कुछ ही क्षण हुए थे कि आचार्यप्रवर के कानों में अस्पष्ट शब्द पड़े--'मंगलपाठ सुनना है' आचार्यप्रवर ने सेवा में स्थित मुनिजी से पूछा--'बाहर कोई खड़ा है क्या? मुनिजी बोले--'किन्हीं को कटक जाना है तो मंगलपाठ सुनना चाहते हैं, किन्तु अभी पूज्यप्रवर विश्राम करवाएं, वे लोग आधा घंटा बाद में मंगलपाठ सुन लेंगे।' आचार्यप्रवर ने फरमाया--'वे लोग इतनी देर कहां रहेंगे। अभी मंगलपाठ सुना देते हैं।' यह फरमाते हुए आचार्यप्रवर विराजमान हो गए और इच्छुक श्रद्धालुओं को मंगलपाठ सुना दिया। आचार्यप्रवर के इस अनुग्रह में अभिस्नात लोग अहोभाव की अनुभूति कर रहे थे।

आज अपराह्न करीब दो बजे से पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में तथा साधु-साध्वियों की उपस्थिति में 'अनुशासन संहिताः चारित्रात्मा समुदाय' का वाचन प्रारम्भ हुआ। शनिवार, रविवार के सिवाय प्रायः प्रतिदिन अपराह्न करीब २.०० बजे से २.३० बजे तक चलने वाले इस उपक्रम में पूज्यप्रवर स्वयं अनुशासन संहिता का सोच्चारण वाचन करते हैं।

आज दिन-रात्रि में स्थानीय कई जैनेतर लोग पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए।

जिसके भीतर सच्चाई, उसमें भगवत्ता

६ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः जाजपुर रोड से पानीकोइली की ओर प्रस्थान किया। जाजपुररोडवासी पूज्यप्रवर को पहुंचाने काफी दूर तक साथ चले। आचार्यप्रवर करीब ११.० कि.मी. का विहार कर पानीकोइली में स्थित पानीकोइली नोडल हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हम अभी अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। उसमें तीन बातों का प्रचार किया जा रहा है--सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। तीनों में एक है--नैतिकता। ईमानदारी के दो आयाम हैं--झूठ नहीं बोलना और चोरी नहीं करना। जो व्यक्ति झूठ और चोरी का परित्याग कर लेता है, वह ईमानदार होता है। झूठ एक दुर्गुण है। वह गर्हणीय है। वह अविश्वास का कारण बनता है। आदमी कहीं भी रहे, कोई कार्य करे, उसे हमेशा झूठ का परिवर्जन करने का प्रयास करना चाहिए। सच्चाई की महिमा होती है। वह सम्माननीय और पूजनीय होती है। वह आत्मा का भी कल्याण करती है और व्यवहार में भी आदमी को उन्नत बनाती है। जिसके भीतर सच्चाई होती है, मानों उसमें कुछ अंशों में भगवत्ता आ जाती है। आदमी क्रोध, लोभ, भय और हास्यवश झूठ बोल सकता है। झूठ से बचने के लिए इनका परिवर्जन करने का प्रयत्न करना चाहिए। कहीं सच बोलना संभव न हो तो मौन रह जाना चाहिए।'

आचार्यप्रवर ने समुपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों और अन्य ग्रामीणों को अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण करवाए। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री रवीन्द्र कुमार साहू ने कहा--'अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी के आगमन से हमारा विद्यालय ही नहीं, हमारा अंचल भी धन्य हो गया। आप अहिंसा यात्रा के द्वारा महान कार्य कर रहे हैं। आप पैदल चलकर जनता के कल्याण के लिए निःस्वार्थ भाव से कठोर परिश्रम कर रहे हैं। आपके दर्शन कर हमें अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही है। परोपकार के लिए समर्पित आपका जीवन हम सबके लिए प्रेरणादायी है। आपकी इस यात्रा से समाज में बदलाव अवश्य आएगा, ऐसा मेरा विश्वास है।'

आज बलराम साहू नामक स्थानीय व्यक्ति पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में पहुंचा। उसके पांव में फ्रैक्चर था। वह बोला--'मैंने समाचार पत्र में आचार्यश्री और अहिंसा यात्रा के बारे में पढ़ा तो मैं बहुत प्रभावित हुआ।

मन में आया कि मुझे आचार्यश्री के दर्शन करने चाहिए। मैं चलने में कठिनाई होने के बावजूद आचार्यश्री के दर्शन करने के लिए आया हूं। आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा के तीनों उद्देश्यों से जुड़कर आदमी मुक्ति का पथ पा सकता है।'

आज दिन-रात्रि में स्थानीय जैन एवं जैनेतर लोग बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए।

गुरुजी! आपको देखकर लगा कलियुग का अंत आ गया है

७ जनवरी। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः पानीकोइली से बाराबाटी के लिए प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती कवाख्या गांव के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया। कटक ओड़िशा पुलिस के आधुनिकीकरण आई.जी. श्री अरुण बोथरा ने आज प्रातः पूज्यप्रवर के दर्शन किए। वे प्रायः पूरे विहार के दौरान पैदल चले। ज्ञातव्य है कि मूलतः पीलीबंगा निवासी श्री बोथरा तेरापंथ समाज के सदस्य हैं। ब्राह्मणी नदी पर बना पुल पूज्यचरणों के स्पर्श से पावनता को प्राप्त हुआ। रविवार होने के कारण आज कटक, भुवनेश्वर और कोलकाता के लोग अच्छी संख्या में पूज्यसन्निधि में उपस्थित थे।

बाराबाटी में परम पूज्य आचार्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय विधायक श्री जीतू बाबू के नेतृत्व में बड़ी संख्या में ग्राम्यजन उपस्थित थे। उन्होंने पूज्यप्रवर को सादर वंदन कर भावभीनी अगवानी की। लगभग १७.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर बाराबाटी में स्थित बाराबाटी गर्ल्स हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

विधायक श्री जीतू बाबू को किसी कार्यवश लौटना था। इस कारण वे मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में संभागी नहीं बने। वे प्रातराश से पूर्व पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में पहुंचे और बोले--गुरुजी! आपके दर्शन कर बहुत अच्छा लगा। मेरे समर्थक कह रहे हैं कि आज तक मात्र सुना था कि ऋषि-महर्षि होते हैं, किन्तु सच्चे संन्यासी के दर्शन आज पहली बार हुए हैं। गुरुजी! मुझे तो आपको देखकर यह लगा कि अब कलियुग का अंत आ गया है। पूज्यप्रवर ने उन्हें संक्षिप्त पथदर्शन प्रदान किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'साधना के क्षेत्र में तपस्या का भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसके द्वारा आदमी अपनी आत्मा का शोधन कर सकता है। पूर्वार्जित पाप कर्मों को तोड़ने का उपाय है तपस्या। सलक्ष्य अनाहार की साधना तपस्या है तो जप और श्रम भी तपस्या है।

साधु का एक नाम है तपोधन। तप जिसका धन है, वह तपोधन होता है। साधु में तप होना चाहिए। भगवान महावीर के जीवन में कितनी तपस्या थी। लगभग साढ़े बारह वर्षों के अपने साधनाकाल में उन्होंने कितनी तपस्या की। उस दौरान उन्होंने कभी लगातार दो दिनों तक खाना नहीं खाया और बेले से कम तपस्या नहीं की। तपस्या भी तिविहार नहीं, चौविहार ही की। उनके साधनाकाल में पारणे के दिन बहुत थोड़े और अनाहार की तपस्या के दिन ज्यादा थे। उनके जीवन में अनाहार की तपस्या के साथ आभ्यंतर तपस्या भी थी। उन्होंने केवल उस जन्म में ही नहीं, पिछले जन्मों में भी साधना/तपस्या की थी। 'नंदन राजा' के जीवन में उन्होंने लाखों मासखमण कर लिए थे। इस प्रकार वे पिछले जन्मों में भी तपस्या करके आए थे और उस जीवनकाल में भी उन्होंने तपस्या की।

अनाहार की लंबी तपस्या करना कठिन कार्य है। हमारे धर्मसंघ में अनेक-अनेक तपस्वी हुए हैं। 'अ.भी.रा.शि.को. नमः' में पांच तपस्वी संतों का जप किया जाता है। उनका स्तुति गीत भी गाया जाता है।

गुरुदेव तुलसी के युग में गोगुन्दा के मुनिश्री सुखलालजी स्वामी हुए, जिन्हें घोर तपस्वी के रूप में संबोधित किया गया। कई दिनों तक निरंतर भूखे रहना, साथ में सेवा भावना का रखना और गर्म-गर्म शिला पर सोकर आतापना लेना कठिन कार्य है।'

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित ग्रामीणों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए। विद्यालय के शिक्षक श्री संजय कुमार साहू ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आज भी दिन-रात्रि में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ स्थानीय लोगों के आने का तांता लगा रहा। आचार्यप्रवर का त्याग-तपोमय व्यक्तित्व समागंतुकों के हृदय में श्रद्धाभाव जागृत कर रहा था।

अनित्य जीवन में धर्म का संचय करें

८ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः बाराबाटी से चण्डीखोल की ओर प्रस्थान किया। यत्र-तत्र समूह रूप में खड़े 'बाराबाटी' के दर्शनार्थियों पर पूज्यप्रवर ने आशीषवृष्टि की। राष्ट्रीय राजमार्ग के दोनों ओर काफी दूर तक सब्जी मंडी लगी हुई थी। बताया गया कि यह इस एरिया की सबसे बड़ी मंडी है। यहां 'हॉल-सेल' रूप में सब्जियों का विक्रय किया जाता है। आसपास की सभी सब्जी मंडियों और भुवनेश्वर व कटक की सब्जी मंडियों में यहीं से सब्जी निर्यात की जाती है। मार्गस्थ जराका के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

आचार्यप्रवर का चण्डीखोल पदार्पण यहां प्रवासित एकमात्र तेरापंथी परिवार को हर्ष विभोर बनाए हुए था। लूणिया परिवार के सदस्यों ने अपनी दुकान के समीप पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। किसी समय यहां निवास करने वाले खटेड़ परिवार के सदस्य भी आचार्यप्रवर के पदार्पण के संदर्भ में अपनी कर्मभूमि में उपस्थित थे। लगभग १३.० कि.मी. का विहार कर परमाराध्य आचार्यप्रवर चण्डीखोल में स्थित डी.यू. पब्लिक स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम से पूर्व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पूर्वी ओड़िशा प्रान्त के प्रान्त प्रचारक श्री विपीन नंदा व सह प्रान्त प्रचारक श्री सृष्टिधर विशाल ने परमाराध्य आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'मनुष्यों का जीवन बहुत ही अनित्य है। कुश के अग्र भाग पर टिकी हुई ओस बूंद की भांति मनुष्यों का जीवन अल्पकालिक होता है। प्राचीनकाल अर्थात् यौगलिक काल में मनुष्यों का आयुष्य काफी लंबा होता था, किन्तु वर्तमान में उसकी अपेक्षा आयुष्य काफी कम होता है। भविष्य में और भी कम आयुष्य होगा, ऐसा बताया गया है। इस जीवन में कल का दिन आएगा या नहीं, यह कहना भी कठिन है। दुर्घटना, बीमारी, प्राकृतिक आपदा आदि अनेक कारणों से मृत्यु हो सकती है। आदमी को सोचना चाहिए कि यह शरीर अनित्य है। मृत्यु निकट से निकटतर होती जा रही है। एक दिन हर मानव को उसका ग्रास बनना होता है। इस अनित्यता से प्रेरणा लेकर आदमी को धर्म का संचय करना चाहिए। उसका जीवन ऐसा रहे कि वह पापों से बच सके और धर्म का अर्जन कर सके।'

आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त कार्यक्रम में उपस्थित विद्यालय प्रबन्धन से जुड़े हुए लोगों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान कर संकल्पत्रयी स्वीकार करवाई।

डी.यू. पब्लिक स्कूल की प्राचार्या श्रीमती रश्मिता मिश्रा ने आचार्यप्रवर के स्वागत में कहा--'आज हमारे लिए एक महत्त्वपूर्ण अवसर उपस्थित हुआ कि एक महान गुरु हमारे इस विद्यालय में पधारे हैं। अहिंसा

यात्रा की व्यवस्थाओं को देखकर मैं अभिभूत हूं। हमें भी इनसे कुछ प्रेरणा लेनी चाहिए। आचार्यश्री से हमें सुखी जीवन के सूत्र सीखने हैं। आपने हमें जो तीन संकल्प करवाए वे बहुत सरल हैं, किन्तु इनका पालन कर लें तो बहुत बड़ा बदलाव आ सकता है। मुझे और भी अच्छा लगा कि आपने इन तीनों प्रतिज्ञाओं को स्वीकार करने के लिए हम पर कोई दबाव नहीं बनाया। आपकी प्रेरणा से हमने स्वेच्छा से इन्हें स्वीकार किया है। हम इनका जीवन भर मजबूती के साथ पालन करेंगे, यह विश्वास दिलाती हूं।'

चण्डीखोल से संबंधित खटेड़ परिवार की ओर से श्री नरेश खटेड़ और श्रीमती सारिका खटेड़ ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

धर्म है सच्ची शरण

६ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः चण्डीखोल से छतिया की ओर प्रस्थान किया। इन दिनों राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर'१६ पर गतिमान होने के कारण गांवों से कुछ दूरी रहती है। फिर भी मार्गवर्ती 'बड़ा चना' और 'हाटकरगन्धा' गांव के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। राजमार्ग से दृष्टिगोचर हो रहे 'छतिया वट मंदिर' के विषय में ज्ञात हुआ कि 'संत अच्युतानंदजी' ने अपने ग्रंथ 'मलिका' में भविष्यवाणी की है कि किसी दिन सारे मनुष्य मर जाएंगे और पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर की सीढ़ियों पर मछलियां खेलने लग जाएंगी अर्थात् प्रलयकाल में समुद्र का पानी उस मंदिर तक आ जाएगा। उस समय पुरी मंदिर के मूल नायक 'श्री जगन्नाथ' श्री बलभद्र और सुभद्रा के साथ 'छतिया वट मंदिर' में आ जाएंगे। उसके बाद सतयुग का पुनः प्रारम्भ होगा। संत अच्युतानंदजी की भविष्यवाणी पर लोगों का विश्वास इसलिए है कि उनके द्वारा की गई कुछ भविष्यवाणियां सच सिद्ध हो चुकी हैं। हालांकि मंदिर का निर्माण पांच सदियों से ज्यादा समय पूर्व ही हो चुका था, किन्तु इसका निर्माण कार्य आज भी जारी है। जब भी यहां के लोगों से पूछा जाता है कि यह निर्माण कार्य कब तक चलता रहेगा, उनका उत्तर होता है--'जब तक भगवान जगन्नाथ यहां नहीं आ जाते।' इस मंदिर में बिना मूर्ति की वेदी है, लोग उसकी पूजा करते हैं। मंदिर परिसर में स्थित वटवृक्ष के कारण इसके नाम के साथ 'वट' शब्द जुड़ा हुआ है।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर करीब १२.८ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर छतिया के महापुरुष हरिदास महाविद्यालय में पधारे। परिसर में स्थित कॉन्फ्रेन्स हॉल में आचार्यप्रवर का प्रवास हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में परस्पर सहयोग किया जाता है। बड़ों द्वारा संरक्षण भी दिया जाता है। इसके बावजूद कोई किसी को त्राण नहीं दे सकता। दूसरों से सहयोग मिलता है, यह एक तथ्य है तो दूसरे का शरण नहीं बन सकते, यह भी एक तथ्य है। एक दृष्टि से आदमी अत्राण है। जब कोई बीमारी लाइलाज बन जाती है, तब व्यक्ति की अशरणता प्रकट होती है। वह जब बुढ़ापे से आक्रांत हो जाता है, तब भी उसकी शरण कौन बन सकता है। मौत आने पर कौन उससे बचा सकता है। ऐसी स्थितियों में आदमी अशरण बन जाता है। छह खण्ड को जीतने वाले चक्रवर्ती भी मौत से बच नहीं पाए।

जो आदमी धर्म की शरण ले लेता है, वह कभी रोग, बुढ़ापा और मृत्यु से पूर्णतया मुक्त हो सकता है। आदमी अर्हत्, सिद्ध, साधु और केवली भाषित धर्म की शरण ले, यह काम्य है। धर्म के उपदेशक धर्माचार्य की शरण लेनी चाहिए। तीर्थंकरों के प्रतिनिधि धर्माचार्य से पथदर्शन प्राप्त कर धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए। धर्म त्राण है, शरण है, द्वीप है। धर्म की साधना से आदमी को परम त्राण मिल सकता है। जो आदमी धर्म की शरण में चला जाता है, वह त्राण पा सकता है और वह औरों को भी त्राण दे सकता है।

कॉलेज के प्रधानाध्यापक श्री प्रदीप्त कुमार दास ने कहा--'मैं संपूर्ण महाविद्यालय परिवार की ओर से

जैनाचार्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का स्वागत-अभिनन्दन करता हूं। हमारा यह सौभाग्य है कि आचार्यश्री के रूप में एक महापुरुष का प्रवास हमारे यहां हो रहा है। आपका प्रवचन का संदेश हम सबके लिए आचरणीय है। मैं आपके प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं।'

नववर्ष के अवसर पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी द्वारा समुच्चरित स्वरचित कविता

एक पल भी जी मगर इन्सान बनकर जी।
अमर अवदान बनकर जी।
मधुर संगान बनकर जी।।

क्यों निराशा की कभी काली घटा छाए,
क्यों कभी मन में तनिक अवसाद आ पाए,
जिन्दगी में तू नया अरमान बनकर जी।

थक गया राही! अभी क्यों दूर मंजिल है,
नहीं है पाथेय पूरा पंथ पंकिल है,
हौसला मत हार तू गतिमान बनकर जी।।

सफलता का राज धीरज अनुभवी वाणी,
नीर परिणत बर्फ में है सहज सहनाणी,
जल्दबाजी छोड़ तू धृतिमान बनकर जी।।

हार में क्यों गम खुशी क्यों जीत में होती?
कर प्रतीक्षा स्वाति की बनना अगर मोती,
सघन तम में भी सदा द्युतिमान बनकर जी।।

स्मृति संबल

- बीदासर निवासी फरीदाबाद प्रवासी श्रीमती किरणदेवी गेलड़ा (धर्मपत्नी स्व. रूपचंदजी गेलड़ा) का निधन हो गया है। प्रतिदिन दो सामायिक करने वाली श्राविका ने १८ वर्ष तक श्रावण मास में एकांतर किया। विगत १२ वर्ष से किडनी की तकलीफ में भी धर्मचर्या को नहीं छोड़ा। वेदना को दृढ़ मनोबल से सहन किया। गेलड़ा परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- भुसावल निवासी विद्यादेवी चोरड़िया (धर्मपत्नी श्री प्रकाशचंद चोरड़िया) का देहावसान हो गया। प्रतिदिन दो सामायिक, नवकारसी तथा स्वाध्याय-ध्यान का नित्य क्रम था। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी की खानदेश अहिंसा यात्रा के दौरान लंबी सेवा की। खानदेश तथा भुसावल पधारने वाले चारित्रात्माओं की रास्ते की सेवा में सतत जागरूक रहती थीं। उन्होंने प्रतिक्रमण, तेरापंथ प्रबोध, श्रावक संबोध आदि कंठस्थ किए। परिवार से मुनि सिद्धकुमारजी धर्मसंघ में साधनारत हैं। पूरे चोरड़ियापरिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- श्रीडूंगरगढ़ निवासी कोलकाता-राउरकेला प्रवासी श्री देवचंद पुगलिया का देहावसान हो गया। वे प्रतिदिन चार-पांच सामायिक एवं जप आदि का नित्य क्रम रखने वाले श्रावक थे। पौषध के अतिरिक्त ग्यारह व्रतों को वे धारण किए हुए थे। गुरुदर्शन एवं सेवा में रुचि रखते थे। उन्होंने अपने पूरे परिवार में धर्म के गहरे संस्कार भरे। पुत्र एवं पुत्रवधू सभा एवं महिला मण्डल में क्रमशः जुड़े हुए हैं। धर्मपत्नी श्रीमती मैना

देवी ने भी इस परिस्थिति में दृढ़ मनोबल का परिचय दिया। श्रीडूंगरगढ़ का पुगलिया परिवार संघ एवं संघपति के प्रति दृढ़ श्रद्धालु है।

- श्रीडूंगरगढ़ निवासी हरिनगरा (नेपाल) सिलीगुड़ी प्रवासी श्री श्रीचंदजी सेठिया का निधन हो गया। प्रतिदिन सात-आठ सामायिक जिसमें नियमतः एक सामायिक खड़े-खड़े, दो सामायिक पूर्णतः मौन रहकर करते थे। प्रतिदिन प्रवचन श्रवण से पूर्व अन्न का परिवर्जन और विगत २० वर्षों से जमींकंद का त्याग था। तपस्या में ग्यारह तक की लड़ी के साथ अनेक उपवास आदि भी किए। पूज्यप्रवर की नेपाल यात्रा में हरिनगरा स्थित निवास स्थान पर पूज्यप्रवर का आंशिक प्रवास प्राप्त हुआ। उनके पुत्र भी धर्मसंघ की सेवा में तत्पर हैं। सेठिया परिवार संस्कारी है।
- बालोतरा निवासी श्रीमती शांतिदेवी बैदमुथा (धर्मपत्नी स्व. श्री केशरीचंदजी बैदमुथा) का स्वर्गवास हो गया। प्रायः प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं सेवा उपासना का क्रम रहता था। उन्होंने धर्म के संस्कार पूरे परिवार में संक्रांत किए। पुत्र गौतमचंद उपासक के रूप में तथा पौत्री दिप्ती बैदमुथा पारमार्थिक शिक्षण संस्था में अध्ययन रत हैं। उन्होंने रुढ़ि को कभी प्रश्रय नहीं दिया। सन् २००० में पति के स्वर्गवास के पश्चात् भी शीघ्र ही शोक समाप्त कर मारवाड़ समाज में अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। अंतिम समय में पूर्ण जागरूकता की स्थिति में संथारा स्वीकार कर श्रावक के तीसरे मनोरथ को भी पूर्ण किया। परिवार ने भी उनकी इच्छा अनुसार शीघ्र शोक सम्पन्न कर प्रवासित चारित्रात्माओं के दर्शन किए। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।

स्मारणा

- कोई भी केन्द्रीय संस्था अथवा उसकी अंगभूत संस्था अपने-अपने क्षेत्र में अपने-अपने सदस्यों की डायरेक्ट्री निकाले तो आपत्ति नहीं। किन्तु समग्र समाज की डायरेक्ट्री महासभा व सभा के सिवाय अन्य कोई भी संघीय संस्था न निकाले तथा कोई भी संघीय संस्था अपने सदस्यों की डायरेक्ट्री अपने क्षेत्र की सीमा से बाहर की न निकाले। जैसे-लाडनूं की स्थानीय संस्था नागौर जिले की न निकाले। पूर्व में यदि कोई डायरेक्ट्री प्रकाशित हो चुकी है तो उसके अगले संस्करणों में प्रस्तुत निर्णय का अतिक्रमण नहीं हो।

(श्रावक संदेशिका, धारा-१३१)

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा को भेंट

५१०००/- स्व. डालमचंदजी गोलछा (बीदासर-वापी-मुम्बई) की पुण्य स्मृति में उनकी धर्मपत्नी जतनदेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू जगत-हेमा, हितेन्द्र-रितु, सुपौत्र करण, सुपौत्री वृद्धि गोलछा।

५१०००/- तनसुख दिलीप मनोज अमित नाहर, चेन्नई-दिवेर।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapati@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला